International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 462-463

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 462-463
www.allresearchjournal.com
Received: 01-08-2020
Accepted: 05-09-2020

हितेन्द्र कुमार
पी0एच0डी0 शोधार्थी
ऐ0के0 कॉलेज, शिकोहाबाद,
फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
हितेन्द्र कुमार
पी0एच0डी0 शोधार्थी
ऐ0के0 कॉलेज, शिकोहाबाद,
फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

भारतीय नागरिकों में राजनीतिक अभिरूचि सहभागिता एवं सजगता एक अध्ययन

हितेन्द्र कुमार

सारांश
यदि हम व्यक्ति के रानीति में अभिरूचि के साथ उनके इसमें सहभागिता को देखें तो हम उसके परिवार की राजनीति में सक्रियता, परिवार का पंचायतों में प्रतिनिधित्व, चुनाव के प्रमुख मुद्दे, चुनाव में भाग लेने का कारण, राजनीति में प्रवेश, राजनीतिक चर्चाओ में भागीदारी इत्यादि का आंकलन करना होगा। हमारे देश में समाज का वह भाग जिसमें अब तक लोग राजनीति के प्रति उदासीन थे व अब रानीति में रूचि लेने चले है। इसमें कोई संदेह नही है कि राजनीति के प्रति लोगों में अभिरूचि उत्पन्न होना राजनीतिकरण का प्रथम तत्व है एवं राजनीतिकरण का दूसरा तत्व समाज या समाज के किसी भाग में वहां लोगों को राजनीति के विषय में कोई ज्ञान या सूचनाएँ उपलब्ध नही थी वहां राजनीतिक ज्ञान का प्रसार हो। राजनीतिक सजगता राजनीतिक सस्थाओं एवं, प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी के साथ राजनीतिक व्यवस्था के प्रति समक्ष को प्रदर्शित करता है।

मुख्य शब्दः चुनाव, मतदान, संचार इत्यादि

प्रस्तावनाः
हमारे देश में समाज का वह भाग जिसमें अब तक लोग राजनीति के प्रति उदासीन थे वे अब राजनीति में रूचि लेने लगे हैं। इसमें प्रवेश करने वाले व्यक्ति प्रत्येक व्यक्ति को अपनी महत्वाकांक्षाएं होती है निःसंदेह समय के साथ इसमें प्रतिस्पर्द्धा बहुत अधिक बडी है। राजनीति वर्तमान में सेवा भावना तक सीमित नही रह गयी है। राजनीति के प्रति दूसरा अनिवार्य तथ्य है समाज या समाज के किसी भाग में जहॉ लोगों को राजनीति के विषय में कोई ज्ञान, जानकारी या सूचनाऐं उपलब्ध नहीं थी, वहॉ राजनीतिक ज्ञान प्रसार हो जाए एवं अधिकाश व्यक्तियों को राजनीति के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित जानकारी होने लगे जो राजनीतिक सजगता का प्रतीक माना जा सकता है। यदि राजनीतिक सजगता राजनीतिक संस्थाओं एवं प्रतिक्रियाओं के बारे में जानकारी के साथ राजनीतिक व्यवस्था के प्रति समक्ष को प्रदर्शित करना है राजनीतिक सजगता का सहभागी अभिविन्यास एवं राजनीतिक दक्षता का गहरा सम्बन्ध होता है। राजनीतिक सजगता का स्तर लोकतंत्र के सफल संचालन में दूरगामी परिणामों का द्योतक है। लोगों की राजनीतिक मुद्दों एवं सरकारी कामकाज के बारे में जानकारी अच्छी होगी तो उनकी राजनीतिक प्रक्रियाओं में अर्थपूर्ण भागीदारी बढेगी
जिससे अच्छे राजनीतिक निर्णय लने में सुविधा होगी। इसके अतिरिक्त राजनीतिक सहभागिता, राजनीतिकरण का अनिवार्य तथ्य है। राजनीतिकरण के लिये राजनीतिक सहभागिता के कई रूप हो सकते है। जैसे चुनाव में भाग लेना, मतदाता का स्वयं उम्मीदवार के लिये खडा होना, चुनाव के लिए काम करना, किसी दल का सदस्य बनना इत्यादि।
प्रत्येक राष्ट्रकी राजनीति वहॉ की सामाजिक परिस्थितियों से तथा समाजिक परिस्थितियों , वहॉ की राजनीतिक से सीधे तौर से प्रभावित होती है। जिससे उस देश की राजनीतिक संस्कृति का निर्माण होता है। यह राजनीति संस्कृति, राजनीतिक व्यवस्था के चरित्र निर्माण में अहम भूमिका निभाती है। यदि राजनीतिक संस्कृति को दूसरे रूप में देखा जाय तो राजनीतिक संस्कृति व्यक्तियों की राजनीतिक जागरूकता की दिशा तय करती है। इसके आधार पर ही वहॉ के नागरिक यह अनुभव करते है कि वे निर्णय प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनकर उसे प्रभावित कर सकते हैं। हमारे देश में प्रत्याशी का चुनाव में भाग लेने के कई कारण है जैसे राजनीति में रूचि होना, सामाजिक सेवा की भावना पद प्राप्ति की इच्छा होना, परिवार व जाति का दववा, ग्रामवासियों का आग्रह इत्यादि।
भारत में मतदान प्रक्रिया– लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में मतदाताओं का मतदान आचरण एक महत्वपूर्ण पक्ष है यह सभी जानते हैं कि मतदाताओं के रूप में देश के सभी नागरिक समान होते है।

मतदान के समय भी व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से अपने मत का उपयोग करने का अधिकार होता है। परन्त जिस तरह नागरिकों के मध्य जो समानता एवं स्वतंत्रता हमें दिखाई देती है, परन्तु वैसी होती नही है। समाज में व्यक्ति के जीवन स्तर, जीवन मूल्य, विष्वास, कार्य प्रणाली एवं उनकी आदतों में अन्तर देखने को मिलता है। यह अन्तर उनकी अनुवांशिकता, पर्यावरण, शिक्षा आदि के कारण होता है। ये सभी कारक व्यक्ति के चिन्तन व सोच को प्रभावित करते है। चाहे मतदान अचरण हो या किसी अन्य राजनीतिक पक्ष से सम्बन्धित कोई सामाजिक क्रियाः इसमें वैयक्तिक सोच की प्रभाव भिन्नता अवष्य ही अपना प्रभाव दर्शाती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भौतिक संस्कृति का प्रभाव अधिक दृष्टिगोचर हो रहा है। ऐसी दशा में राजनीतिक संस्कृति में भौतिक संसाधनों का प्रभाव भ बढता जा रहा है। यह बढता प्रभाव मतदान व्यवहार में भी अपना प्रभाव मतदान व्यवहार में भी अपना प्रभाव दर्शाता है। यहां तक कि मतदान के लिए पूॅजी क प्रभाव उल्लेखनीय भूमिका का कार्य करता है। धन के बल के प्रभाव पर मतदाता अपने अभिमत तक को परिवर्तित कर लेते है। तथा मतदान की प्रक्रिया में मतदान स्थल तक वाहनों द्वारा मतदाताओं को लाने ले जाने की सुविधा प्रदान करना भी मतदान व्यवहार को प्रभावित करता है। राजनारायन[3] (1972) के अनुसार अशिक्षित मतदाता मतदान के लिए अपने घर गांव के प्रभावशाली व्यक्ति के इशारे पर भी मतदान कर लेते है। जबकि शिक्षित लोग प्रत्याशी, राजनीतिक दल की नीतियों तथा चुनाव घोषणा पत्र के आधार पर मतदान करने का निर्णय लेते है। तो कुछ लोग चुनाव मैदान में उतरे प्रत्याशियों के व्यक्तित्व को देखकर भी मतदान करते है। तो कुछ जीत हार की संभावनाओं को लेकर, तो कुछ मतदाता जातिगत आधार पर इन सभी तथ्यों के साथ मतदान व्यवहार में हिंसा का पक्ष भी कही–कही देखने को मिलता है।

हमारे देश में राजनीतिक मुद्दो एवं सरकारी कामकाज के बारे में जानकारी अच्छी होगी तो उनकी राजनीतिक प्रक्रियाओं में अर्थपूर्ण भागीदारी बढेगी जिससे अच्छे राजनीतिक निर्णय लेने में सुविधा होगी। यदि हम व्यक्ति के राजनीति में अभिरूचि के साथ उनके इसमें सहभागिता को देखें तो हम उसके परिवार की रजनीति में सक्रियता, परिवार का पंचायतो में प्रतिनिधित्व, पंचायत चुनाव में भाग लेने की प्रेरणा, चुनाव के प्रमुख मुद्दे, चुनाव में उम्मीदवारों की संख्या, मत प्राप्ति का आधार , चुनाव में भाग लेने का कारण, राजनीति प्रवेश, राजनीतिक दल से सम्बद्धता, संचार माध्यमों के प्रति जागरूकता, राजनीतिक चर्चाओं में भागीदारी, चर्चाओं के विषयय, राजनीतिक क्षेत्र में महत्वकांक्षा इत्यादि का आंकलन करना होगा।

निष्कर्ष–: इस अनुभाविक अध्ययन से प्राप्त प्राथमिक तत्वों के विष्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि चुनाव में ग्रामीण विकास, सामाजिक सुधार, स्थानीय समस्याओं का निराकरण, शासकीय क्रियाओं का क्रियानवयन, कमजोर वर्गो का उत्थान जैसे मुद्दे प्रमुख रहते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Iqubal Narayan. Emerging concept of Panchyat raj: Planning and democracy, Sarswati Prakashan Shadara, Delhi, 1995, 18.
2. Pathak DN. Political Behaviour in Gujral- with special Reference to 4th General elections in Dasture, New Delhi, 1972, 102.
3. Raj Narayan. Boting Behaviour in Uttar Pradesh, A Study in fourth general elections supplement-, Unpublished Manu script, Gov. of India Delhi, 1972, 13.